SHRI HRIDAY NARAYAN DIKSHIT

Shri Hriday Narayan Dikshit is a renowned thinker, philosopher, politician and social worker, known for his contributions to politics, education, society, literature and philosophy. His works hold a significant place in the Indian knowledge tradition, reflecting his deep intellectual insights and commitment to social and political discourse.

2. Born on 25th December, 1946 in Lauwa, Unnao district, Uttar Pradesh, Shri Dikshit completed his Masters in Economics from Kanpur University. He began his political journey in his native place and became a Member of the District Panchayatraj Council, Unnao, in 1972. During the Emergency (1975-1977), he was imprisoned for 19 months. He led multiple protests, marches and public movements in Unnao on different issues. Committed to the betterment of society and the pursuit of knowledge, he has taken on the responsibility of serving education as the Manager of Bharatiya Adarsh Anglo Sanskrit Inter College, Purwa, Unnao (since 1981) and as the Foundcr/Manager of Pt. Deendayal Upadhyay Girl's Inter College, Mawai, Unnao.

3. Shri Dixit has had a distinguished political career, leaving a significant impact on the political system with his creative and innovative ideas. He served as the Speaker of the 17th Uttar Pradesh Legislative Assembly and as Minister for Panchayati Raj and Parliamentary Affairs in Uttar Pradesh. Elected five times as a Member of the Uttar Pradesh Legislative Assembly (9th, 10th, 11th, 12th, and 17th), he also served as a Member of the Uttar Pradesh Legislative Council and Leader of the BJP Legislative Party (2010-2016). Additionally, he held key positions as Chairman of the State Legislature's Public Undertaking Committee. Within the Bharatiya Janata Party (BJP), he has been a Member of the National Executive Committee, District Secretary of Jan Sangh, District President of BJP, Unnao, as well as Vice President and Spokesperson of BJP, Uttar Pradesh.

4. Shri Dikshit has had a remarkable journey in journalism and literature. He was the Founder and Editor of Kalchintan magazine (1978-2004) and has been a regular columnist for Dainik Jagran for over 35 years. His articles frequently appear in Rashtrdharm, Panchjanya and other nationalist periodicals. His contributions extend to Svvatantra Bharat, Rashtriya Swarup, Amrit Vichar, Daily News Activist, Swadesh, Nai Duniya, Saamna (Mumbai), Jan Sandesh times and many other publications. Over the years, he has authored more than 6,000 articles.

5. Shri Dikshit's literary contributions are remarkable, with numerous published works that enrich the Indian knowledge tradition. His books include 'Shriram: Faith and History', 'Introduction to Rigved', 'Atharv ved ka Madhu', 'Gyan ka Gyan', 'Nachta Adhyatm', 'Madhu Abhilasha', 'Hum Bharat ke Log', 'Hind Swaraj ka Punarpath', 'Rigved and Dr. Ramvilas Sharma', 'Madhuvidya', 'Madhurasa', 'Sanskritik Rashtradarshan', 'Bhartiya Sanskriti ki Bhoomika', 'Bhagavad Gita', 'Sanskritik Anubhuti Rajnaitik Prititi', 'Bhartiva Samaj Rajnaitik Sankraman', 'Jambudweepe Bharatkhande', 'Sanvidhan ke Samant', 'Pandit Deendayal Upadhyay-Darshan, Arthnecti, Rajneeti', 'Tatvdarshi Pandit Deendayal Upadhyay', 'Bharat ke Vaibhav ka Deendayal Marg', Pandit Deendayal Upadhyay-Drishti, Drashta, Darshan[1], 'Ambedkar ka Matlab', 'Rashtra Sarvopari', 'Bharat ki Rajniti ka Charitrik Sankat', 'Suvasit Pushp' (a compilation of Atal Bihari Vajpayee's parliamentary speeches), 'Rashtray Swaha', 'Bhartiy Anubhuti ka Vivekanand', 'Hindutv ka Madhu', The Way Bharat Thinks, Geeta Ka Antarsangeet', Gita Revisited and many other works. His extensive body of work reflects his deep engagement with Indian philosophy, politics, culture and history.

6. Shri Dikshit has received numerous recognitions for his contributions to literature, journalism and social thought. A research study on his works led to the awarding of Ph.D. titled “Hriday Narayan Diskshit and his Journalism. “Additionally, an anthology of his writings, Hriday Narayan Dixit Rachnavali, has been published. He is the recipient of serval prestigious awards, including the Atal Bihari Vajpayee Literary award (Hindi Sansthan, Uttar Pradesh), Ganesh Shankar Vidyarthi Award (Madhya Pradesh Government), Dr. Hedgewar Pragya Samman, (Kumarsabha Library, Kolkata), National Literary creator Award (Madhya Bhartiya Hindi Sahitya Sabha, MP), Bhanu Pratab Shukla Journalism Award (Rashtradharm) and the Deendayal Upadhyay Award (Chhoti Khatu Library, Rajasthan) among others.

श्री हृदयनारायण दीक्षित

श्री हृदयनारायण दीक्षित एक प्रसिद्ध विचारक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, इन्हें राजनीति, शिक्षा, समाज, साहित्य और दर्शन में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। इनकी रचनाओं का भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान है, जो इनकी गहरी बौद्धिक अंतर्दृष्टि तथा सामाजिक और राजनीतिक विमर्श के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है।

2. 25 दिसंबर, 1946 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के लौवा में जन्में, श्री दीक्षित ने कानपुर विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। श्री दीक्षित ने अपनी राजनीतिक यात्रा का आरंभ अपने जन्म स्थान से किया और वर्ष 1972 में उन्नाव जिला पंचायतराज परिषद के सदस्य चुने गए। आपातकाल (1975–1977) के दौरान, उन्हें 19 महीने के लिए कारागार में डाल दिया गया था। इन्होंने कई मुद्दों पर उन्नाव में कई विरोध, मार्च और सार्वजनिक आंदोलनों का नेतृत्व किया। समाज के उत्थान और ज्ञान की खोज के लिए प्रतिबद्ध, श्री दीक्षित ने भारतीय आदर्श एंग्लो संस्कृत इंटर कॉलेज, पुरवा, उन्नाव (1981 से) के प्रबंधक और पंडित दीनदयाल उपाध्याय गर्ल्स इंटर कॉलेज, मवई, उन्नाव के संस्थापक/प्रबंधक के रूप में शिक्षा की सेवा का उत्तरदायित्व लिया है।

3. श्री दीक्षित का राजनीतिक करियर काफी विशिष्ट रहा है, इन्होंने अपने रचनात्मक और अभिनव विचारों से राजनीतिक व्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा है। इन्होंने 17वीं उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश में पंचायती राज और संसदीय कार्य मंत्री के रूप में कार्य किया। उत्तर प्रदेश विधान सभा (9वीं, 10वीं, 11वीं, 12वीं और 17वीं) के सदस्य के रूप में पांच बार निर्वाचित हुए, इन्होंने उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य और भाजपा विधान पार्टी (2010–2016) के नेता के रूप में भी कार्य किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने राज्य विधानमंडल की सार्वजनिक उपक्रम समिति के अध्यक्ष के रूप में निर्णायक पद का कार्यभार संभाला। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के भीतर, वह राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य, जन संघ के जिला सचिव, भाजपा, उन्नाव के जिला अध्यक्ष के साथ–साथ भाजपा, उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष और प्रवक्ता रहे हैं।

4. श्री दीक्षित ने पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया है। वह कालचिंतन पत्रिका (1978–2004) के संस्थापक और संपादक थे और 35 वर्षों से अधिक समय तक दैनिक जागरण के लिए नियमित स्तंभकार रहे हैं। इनके लेख प्रायः राष्ट्रधर्म, पंचजन्य और अन्य राष्ट्रवादी पत्रिकाओं में छपते हैं। इनका कार्यक्षेत्र स्वतंत्र भारत, राष्ट्रीय स्वरूप, अमृत विचार, दैनिक समाचार कार्यकर्ता, स्वदेश, नई दुनिया, सामना (मुंबई), जन संदेश टाइम्स और कई अन्य प्रकाशनों तक फैला हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में, उन्होंने 6,000 से अधिक लेख लिखे हैं।

5. श्री दीक्षित का साहित्यिक योगदान उल्लेखनीय है, इनकी अनेक प्रकाशित कृतियां भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाती हैं। इनकी पुस्तकों में 'श्रीरामः फेथ एंड हिस्ट्री', 'इंट्रोडक्शन टू ऋग्वेद', 'अथर्व वेद का मधु', 'ज्ञान का ज्ञान', 'नाचता अध्यात्म', 'मधु अभिलाष', 'हम भारत के लोग', 'हिंद स्वराज का पुनर्पथ', 'ऋग्वेद और डॉ. रामविलास शर्मा', 'मधुविद्या', 'मधुरस', सांस्कृतिक राष्ट्रदर्शन', 'भारतीय संस्कृत की भूमिका', 'भगवद्गीता', सांस्कृतिक अनुभूति राजनैतिक प्रतीति', 'भारतीय समाज राजनैतिक संक्रमण', 'जम्बुद्वीप भारतखंडे', 'संविधान के सामंत', 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय–दर्शन, अर्थनेक्ति, राजनीति', 'तत्वदर्शी 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय', 'भारत के वैभव का दीनदयाल मार्ग', ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय–दृष्टि, द्रष्टा, दर्शन', 'अंबेडकर का मतलब', 'राष्ट्र सर्वोपरि', 'भारत की राजनीति का चारित्रिक संकट', 'सुवासित पुष्प' (अटल बिहारी वाजपेयी के संसदीय भाषणों का संकलन), 'राष्ट्रय स्वाहा', 'भारतीय अनुभूति का विवेकानंद', 'हिंदुत्व का मधु', द वे भारत थिंक्स, गीता का अंतरसंगीत, गीता रिविजिटेड और कई अन्य कृतियां शामिल हैं। इनका यह विस्तृत कार्य भारतीय दर्शन, राजनीति, संस्कृति और इतिहास के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाता है।

6. श्री दीक्षित को साहित्य, पत्रकारिता और सामाजिक विचार में उनके योगदान के लिए कई सम्मान मिले हैं। उनके कार्यों पर शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप पीएचडी प्रदान की गई जिसका शीर्षक "हृदय नारायण दीक्षित और उनकी पत्रकारिता" है। इसके अतिरिक्त, उनके लेखन का संकलन, हृदय नारायण दीक्षित रचनावली प्रकाशित किया गया है। इन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं, इनमें अटल बिहारी वाजपेयी साहित्यिक पुरस्कार (हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश), गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार (मध्य प्रदेश सरकार), डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान, (कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता), राष्ट्रीय साहित्यिक सर्जक पुरस्कार (मध्य भारतीय हिंदी साहित्य सभा, म.प्र.), भानु प्रताप शुक्ला पत्रकारिता पुरस्कार (राष्ट्रधर्म) और दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार (छोटी खाटू पुस्तकालय, राजस्थान) शामिल हैं।